# HCU-001-001302 Seat No. _____

## B. A. (Sem. III) (CBCS) Examination

**October / November – 2017**

## Hindi

***(Sapt Ekanki - Vyakaran)***

***(Old Course)***

**Faculty Code : 001**
**Subject Code : 001302**

Time : $2\frac{1}{2}$ Hours] [Total Marks : **70**

**सूचना :**

(१) सूचनानुसार उत्तर लिखिए ।

(२) प्रश्न के सामने गुण निर्दिष्ट है ।

(३) सभी प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है ।

१ एकांकी की परिभाषा बताते हुए एकांकी के तत्वों पर प्रकाश डालिए । १४

**अथवा**

१ ''पृथ्वीराज की आँखें'' एकांकी में निरूपित पृथ्वीराज के चरित्र की विशेषताएँ बतलाइए । १४

२ ''दो कलाकार'' एकांकी की कथावस्तु अपने शब्दों में लिखते हुए उद्देश्य स्पष्ट कीजिए । १४

**अथवा**

२ ''लक्ष्मी का स्वागत'' एकांकी के तत्वों पर प्रकाश डालिए । १४

३ ''रीढ़ की हड्डी'' एकांकी में चित्रित समस्याओं की समीक्षा कीजिए । १४

**अथवा**

३ ''यहाँ रोना मना है'' एकांकी की कथावस्तु लिखिए । १४

४ संक्षेप में उत्तर दीजिए : (किन्हीं **दो**) १४

(१) दो कलाकारों की चतुराई ।

(२) ''यहाँ रोना मना है'' की नायिका ।

(३) ''रीढ़ की हड्डी'' एकांकी का शीर्षक ।

(४) ''लक्ष्मी का स्वागत'' में चित्रित सामाजिक समस्या ।

५ (अ) राजकोट महानगरपालिका के स्वास्थ्य अधिकारी को शहर में स्वाइन फ्लु फैल जाने की सूचना देते हुए, उसे रोकने के लिए एक पत्र लिखिए । ७

**अथवा**

(अ) आर्ट्स एन्ड सायन्स कॉलेज – जूनागढ़ के हिन्दी विषय के रिक्त स्थान के लिए अपनी तरफ से आवेदन–पत्र लिखिए ।

(ब) निम्नलिखित परिच्छेद का सारलेखन कीजिए : ७

जीवन क्या है ? जीवन केवल जीना, खाना, सोना और मरजाना नहीं है । मानव जीवन में भी यह सभी प्रवृत्तियाँ होती हैं, क्योंकि वह भी तो पशु है । पर इन के उपरांत वह कुछ और भी होता है । उसमें कुछ ऐसी मनोवृत्तियाँ होती हैं, जो प्रकृति के साथ हमारे मेल में बाधक होती हैं । कुछ ऐसी होती हैं जो इस मेल में सहायक बन जाती है । जिन प्रवृत्तियों से प्रकृति के साथ हमारा सामंजस्य बढ़ता है, वे वांछनीय होती हैं । जिन सामंजस्य में बाधा उत्पन्न होती है, वे दूषित हैं । अहंकार, क्रोध या द्वेष हमारे मन की बाधक प्रवृतियाँ हैं । यदि हम इनको बेरोक–टोक चलने दें तो निःसंदेह वे हमें नाश और पतन की ओर ले जायेगी । इसलिए हमें उनकी लगाम खींचनी है । उन पर संयम रखना है जिससे वे अपनी सीमा से बाहर न जा सकें ।

**अथवा**

(ब) शिक्षा का वास्तविक अर्थ और प्रयोजन व्यक्ति को व्यावहारिक बनाना हुआ करता है, न कि शिक्षित होने के नाम पर अहम् और गर्व का हाथी उसके मन–मस्तिष्क पर बाँध देना । हमारे देश में स्वतंत्रता प्राप्ति से जो शिक्षा नीति और पद्धति चली आ रही है, वह लगभग सौ साल पुरानी है । उसने एक उत्पादन का काम ही अधिक किया है, इस बात का ध्यान एकदम नहीं रखा कि इस देश की अपनी आवश्यकताएँ और सीमाएँ क्या हैं ? इसके निवासियों को किस प्रकार की व्यावहारिक शिक्षा की ज़रूरत है ? बस, सुशिक्षितों की नहीं, साक्षरों की बड़ी पंक्ति इस देश में खड़ी कर दी है, जो किसी दफ्तर में क्लर्क और बाबू बनने का सपना ही देख सकती है ।